# मन के भाव

काव्य संग्रह

अदिति रूसिया

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

# मन के भाव

(काव्य संग्रह)

अदिति रुसिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश (481331)

978-93-94528-25-3

**संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना**

आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

मोबाईल- 9009423393

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2026, अदिति रुसिया

मूल्य- 560.00 रूपये

मुद्रक- सोनी प्रिंटकॉम, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY ADITI RUSIA

**वैधानिक चेतावनीः**- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

# भूमिका

पढ़ने का शौक़ तो बचपन से था। बहुत सारी नॉवेल पढ़ीं हैं बचपन में। पापा के साथ हमेशा हम कवि सम्मेलनों में जाया करते थे तो कविता पढ़ना व सुनना अच्छा लगता था। पापा की एक डायरी थी जिसमें ज़फ़र, शकील बदायूनी, शमीम जयपुरी और भी शायरों की शायरियाँ लिखी थीं। पापा को शेरों-शायरी एवं क़व्वाली का बड़ा शौक़ था ।

पापा की डायरी पढ़कर अपने मन से क़रीब 35-40 शायरियाँ लिखीं। तक़रीबन इतनी ही मेरी कविताएँ भी हैं। 10th -11th  में थी तब छत पर पढ़ाई करते हुए बग़ल की छत पर कबूतरों को दाना चुगते देखा मन में ख़्याल आया कविता लिखने का और एक कविता यूँ ही लिख ली शीर्षक दिया *बेबस इंसान *। इसी तरह कई कविताएँ लिखीं। पहले मैंने एकता के नाम से सारी कविताएँ लिखीं हैं, जो आज भी मेरी डायरी में हैं। मुझे गाना सुनना, गाना और लिखना भी अच्छा लगता है। गानों से कई डायरियाँ भरी पड़ी हैं डाँट भी बहुत खाई अपने इस शौक़ के लिए। सन 1992 में 20 वर्ष की थी शादी हो गई। शादी के बाद सन 1992 में ही माँ पर एक लेख लिखा। कुछ कविताएँ संजय जी के लिए लिखीं। आख़िरी कविता मैंने 1993 में अपने बेटे के लिए लिखी जो अब इस दुनियाँ में नहीं हैं। फिर कार्तिक हमारी ज़िंदगी में आया तो लेखन कार्य बंद हो गया। दोनों बच्चों कार्तिक और कावेरी को उच्च शिक्षा देना मेरा उद्देश्य था। मुझे लगता था मैंने पढ़ाई नहीं की पर दोनों बच्चों को अच्छी शिक्षा देना हैं। इसके लिए मुझे काफ़ी संघर्ष भी करना पड़ा। घरवालों के ख़िलाफ़ जाकर दोनों बच्चों को बालाघाट पढ़ने भेजा। सब कुछ आसन नहीं था। पर मैंने किया ।

काफ़ी लम्बे अरसे के *प्रीति ने मुझे दुबारा लिखने के लिए प्रेरित किया ये 4-5 अप्रैल की बात है जब प्रीति ने मुझे अंतरा में जोड़ा और 6 अप्रैल 2017 को मैंने

लिखा *ख़ुशी* पर। संजय जी व बच्चों का भी पूरा सहयोग मिला। *प्रीति व संजय जी की प्रेरणा आज मैंने कई कविताएँ, लघु कथाएँ लेख एवं संस्मरण लिखे। वैसे तो समाजिक कार्यक्रमों में हमेशा बढ़ चढ़ कर भाग लेती आई हूँ और हमेशा सम्मान प्राप्त किया है पर लेखन के क्षेत्र में जो सम्मान मिला उसका सारा श्रेय मेरी प्यारी सखी प्रीति और संजय जी को जाता है क्योंकि दोनों के बिना मुक़ाम हासिल कर पाना असंभव था। मेरी किताब ***मन के भाव*** जिसमें मैंने अपने मनोभावों को अपनी लेखनी के माध्यम से मोतियों की तरह शब्दों में पिरोने का प्रयास किया है ।

**अदिति रुसिया**
वारासिवनी

# अनुक्रमणिका


| क्र. | शीर्षक | पेज नं. |
|---|---|---|
| 1. | बिछोह | 9-10 |
| 2. | अच्छा लगता है | 11-12 |
| 3. | ख़ाली -1 | 13-14 |
| 4. | ख़ाली -2 | 15 |
| 5. | फूलों में सज रही है | 16-17 |
| 6. | रात के अंधेरे से | 18 |
| 7. | दानव | 19 |
| 8. | रफ़्तार | 20 |
| 9. | मन के मोती | 21 |
| 10. | हाथों में हाथ | 22 |
| 11. | ज़िद | 23 |
| 12. | आदत | 24 |
| 13. | तुम्हारे लिए | 25-26 |
| 14. | मैं और तुम | 27 |
| 15. | माहिर | 28 |
| 16. | बड़े अच्छे लगते हो | 29 |
| 17. | परिंदे | 30-31 |
| 18. | चाहती हूँ | 32 |
| 19. | कन्यादान | 33-34 |
| 20. | तुम कहाँ डूबे हुए हो | 35-36 |

| | | |
|---|---|---|
| 21. | सूना-सूना | 37-38 |
| 22. | युक्ति | 39-40 |
| 23. | भेड़ाघाट | 41-42 |
| 24. | चलो हम बाती बन जाएँ | 43-44 |
| 25. | बेक़ाबू | 45-46 |
| 26. | रंजिश | 47-48 |
| 27. | ये वादा रहा तुमसे | 49 |
| 28. | उपहार | 50 |
| 29. | शून्य | 51 |
| 30. | मनोबल | 52 |
| 31. | ये मौसम बेदर्दी | 53 |
| 32. | मिलना-जुलना | 54 |
| 33. | क़ीमती | 55 |
| 34. | विघ्न | 56 |
| 35. | कुछ तो लोग कहेंगे | 57-58 |
| 36. | प्रीत | 59-60 |
| 37. | दिल के कोरे काग़ज़ पर | 61-62 |
| 38. | पथभ्रष्ट | 63-64 |
| 39. | चंदन | 65 |
| 40. | तुम हो तो मैं हूँ | 66-67 |
| 41. | हर्ष | 68 |
| 42. | किसी मोड़ पर | 69 |
| 43. | वसंत | 70 |

| | | |
|---|---|---|
| 44. | जीना इसी का नाम है | 71-72 |
| 45. | हिम्मत न खोना | 73 |
| 46. | हिम्मत न हारना | 74-75 |
| 47. | क़ाबिलियत | 76 |
| 48. | रोना-धोना | 77-78 |
| 49. | राम | 79-80 |
| 50. | मौन- एक स्त्री की ज़ुबानी | 81-82 |
| 51. | मन्नत का धागा | 83 |
| 52. | बूढ़ी माँ की आस | 84-85 |
| 53. | चोट | 86 |
| 54. | कुछ बात तो है | 87 |
| 55. | विलंब | 88-89 |
| 56. | दिल कहता है भूल जा | 90-91 |
| 57. | अनुमान | 92-94 |
| 58. | बेड़ा पार करेंगे राम | 95-97 |
| 59. | पापा की परी | 98-100 |
| 60. | मानवता की परीक्षा | 101 |
| 61. | माँ | 102-104 |
| 62. | गंगा | 105-106 |
| 63. | विरासत | 107-108 |
| 64. | तुम और मैं | 109-110 |
| 65. | ये लफ़्ज़ आइने हैं | 111-112 |

# बिछोह

अपनों से बिछोह की पीड़ा
इस महामारी के चलते
कुछ अधिक हो गई
रोज़ किसी न किसी
अपने हो या पराए की
मृत्यु का समाचार आम हो गया
मगर उतना ही कष्टप्रद भी
कैसा समय आया है ये कि
अपने ही माता पिता को
बेटा अग्नि नहीं दे सकता
न मिलने की होती है परमिशन ही किसी हो
एक बार जो घर से गए
ठीक हो गए तो सब अच्छा है
नहीं तो वही
बच्चों के लिए अंतिम दर्शन बन गए
क़ितना दर्दनाक हो गया है
अपनों से बिछोह
असमय ही खो रहे हैं हम
अपनों को
न उम्र न कोई असाध्य रोग
फिर भी एक वायरस के कारण

ज़िंदगी से हार रहे हैं लोग
असमय बिछोह की पीड़ा
सहना आसान नहीं
कहीं छोटे बच्चे तो
कहीं बड़ों के ऊपर से उठ रहा साया
माता पिता का
कहीं छूटी नहीं
दुल्हन के हाथों की मेहंदी
और छूट गया पिया का साथ प्यारा
क़ितना दुखद होता है वो क्षण
जब उठता है
सर से माता पिता का साया
सच अपनों से बिछोह की पीड़ा
असहनीय असाध्य है
कहीं कोई डिप्रेशन में जा रहा है
तो कोई इन सबसे उबरने के
प्रयास कर रहा है!

# अच्छा लगता है

अच्छा लगता है
अपनों के लिए कुछ करना
मुझे पता तुम्हें बहुत ग़ुस्सा आता है
जब मैं कोई भी काम
तुम्हारी मर्ज़ी के बिना करती हूँ
मुझे पता है तुम्हें मेरी फ़िक्र होती है
इसीलिए तो तुम मुझसे रुठ जाते हो
पर सच मानों
मुझे तुम्हारे और बच्चों के लिए
काम करना तुम सबके काम के लिए डोलना
अच्छा लगता है
तुम कहते हो न जब
बैठ भी जाओ
थकती नहीं हो क्या
सुबह से लेकर रात तक
चकरी की तरह फिरती हो
तुम्हारे कदम थकते नहीं क्या
ये सुनना भी बड़ा अच्छा लगता है
तुम्हारी डाँट में भी प्यार छुपा होता है
मुझे मेरे बच्चों की फ़रमाइशें पूरी करना
अच्छा लगता है

क्योंकि मेरी ख़ुशी तुम सब हो
और तुम्हें खुश देख मैं खुश हो लेती हूँ
अच्छा लगता है
जब कोई चीज़ तुम्हें या बच्चों को
पसंद आ जाती है
तुम सबके चेहरे की मुस्कुराहट
मुझे सुकून दे जाती है
और हाँ जब बच्चे कहते है न
लाओ आपका हाथ चूम ले
सच मेरी मेहनत रंग ले आती है
सारी थकावट एक पल में
दूर हो जाती है
तुम्हारा मेरी फ़िक्र करना
अच्छा लगता है
तुम्हारा प्यार बड़ा सच्चा लगता है
तुम्हारा साथ बड़ा अच्छा लगता है।

# ख़ाली -1

कैसा समय आया है माँ
जगह जगह सजते थे
पंडाल तुम्हारे
होता था उत्साह अथाह मन में
करने नौ दिन गरबे
सजने सँवरने का
आज मन का कोना कोना रीता है
न कोई उत्साह है
न उमंग ही मन में कोई आज
जगह जगह होते थे
देवी जागरण जस और कीर्तन
सजती थी सुंदर सुंदर झाँकी
भरा रहता था माता का दरबार भक्तों से
आज लगता है सब ख़ाली ख़ाली
जहाँ भरा रहता था
पंडाल तुम्हारा
होती थी गरबे की भी तैयारी
मंदिर का हर कोना सूना लगता है
भक्तों का भी मन
उदास अब लगता है
न होगा कोई जस कीर्तन
न होगा कोई गरबा आज

मंदिर में प्रवेश निषेध है
पंडालों में जाने की अनुमति नहीं है
कैसा समय आया है माँ
कैसी ये दूरी आई है
माँ अपने बच्चों से मिलने तरसे
बच्चे माँ से मिलने तरसे
कैसी घड़ी ये आई है
*सब ख़ाली ख़ाली लगता है*
मन का हर कोना
रीता रीता लगता है
कैसे भरेगा ये ख़ाली पन
जब माँ से मिलने हर बच्चा तड़पता है
कितने बँधन हो गए माँ
मिलने को तुम्हारे
कितनी सावधानी बरतना है हमको
कैसी महामारी आई है
जिसने ये दूरियाँ बढ़ाई हैं
जाने कब ख़त्म होगा ये सब
मिलन की आस लिए बैठे हैं सब
कब ख़त्म होगा ये सब
कब ख़त्म होगा ये रीता पन
कब दौड़ेगी ज़िंदगी फिर पटरी पर ।

# ख़ाली -2

क़ितना ख़ाली-ख़ाली लगता है
अपनों के साथ के बिना
अपनों से अपनों की दूरियाँ
अब सही नहीं जाती
बस घर की चार दिवारी
के अंदर रहते रहते ऊब गया है मन
घर को रोज़ क़रीने से सजा लेते हैं
उम्मीद में कोई तो आएगा
ये सोच दिल को बहला लेते हैं
अब तो घर के सोफ़े भी सवाल करते हैं
ये ख़ाली सोफ़े भी अपनों का इंतज़ार करते हैं
रीता-रीता सा मन लिए
हमें इंतज़ार है नई सुबह का
अपनों से मिलन का
अब ये दूरियाँ सही नहीं जाती
घर की चार दिवारी अब अच्छी नहीं लगती
लगता है उड़ जाऊँ खुले आसमाँ में
पंख लगा पहुँच जाऊँ अपनों से मिलने
अपनों से दूरियाँ अब अच्छी नहीं लगती

# फूलों में सज रही है

फूलों में सज रही है
माता रानी प्यारी
ओढ़ें है देखो लाल चुनरी निराली
फूलों ..

माथे पे सुंदर बिंदिया
चमचम चमकती बिंदिया
सजी माँग सिंदूर से
अँखियाँ है सुरमे वाली
फूलों..

कानों में पहने कुंडल
उसमें कंछड़ी है सुंदर
नथनी है मोतियों वाली
होंठों पे लगाके लाली
फूलों..

गले में पहने हरवा
नौलखा निराला
बाजू बँध देखो
पहने है लड़ियों वाला
फूलों..

हाथों में पहने चूड़ियाँ
कंगन है साथ डाला
हथफूल की शोभा
छिटक रही है न्यारी
फूलों...

कम्मर में पहने करधन
सुंदर है उसमें मीनाकारी
खोंसे से कम्मर खुचना
लड़ियाँ लगी निराली
फूलों..

पैरों में लगा के महावर
पहने पायल घुँघरू वाली
बिछिया चमकती सुंदर
चाल चले मतवाली
फूलों..

अंग में सोहे लहँगा
ओढ़ी चुनरी गोटे वाली
कर के सिंह की सवारी
निकली है माँ भवानी
फूलों..

# रात के अंधेरे से

रात के अंधेरे से
अब डर नहीं लगता
थामा है जबसे हाथ तुम्हारा
रोशन हुआ हुआ है संसार हमारा
तुम्हारा साथ है सारे जहाँ से प्यारा
रात की कालिमा भी
अब अच्छी लगती है
क्योंकि टिमटिमाते तारे
इसी रात का हिस्सा होते हैं
जो अंधेरे में भी
थोड़ी ही सही मगर रोशनी देते हैं
तुम्हारा साथ भी
हर अंधकार से मुझे महफ़ूज़ रखता है
चाहे दुःख के काले बादल हों
या हो काँटों भारी राहें ही
तुम्हारे प्रेम और विश्वास से जीवन महकता है
तुम्हारा प्यारा सा साथ
बड़ा अच्छा लगता है
तुम्हारे प्रेम भरे उजियारे से
रौशन है ज़िंदगी मेरी
इसीलिए अब
रात के अंधेरों से डर नहीं लगता।

# दानव

दुर्गा, क्षमा, शिवाधात्री
स्वाहा, स्वधा अधिष्ठात्री
देवी तुमको नमन हमारा
स्वीकारो बारंबार प्रणाम हमारा

महिषासुर मर्दन कर भवानी
बनी महिषासुर मर्दनी भवानी
किया दानव चंड मुंड का संहार
बनी चामुंडा तुम मात भवानी

शुंभ निशुंभ असुरों को मारा
किया रक्तबीज का भी संहार
धूम्रलोचन को तुमने मारा
किया सदा ही असुरों का संहार

शक्ति स्वरूप में पूजी जाती
आता जब नवरात्रि त्योहार
सोलह श्रृँगार कर मात भवानी
आती धरा पर भक्तों के पास

# रफ़्तार

कितनी तेज गति से
निकल रहा है समय
इस दौड़ती भागती ज़िंदगी में
हम इतने मशगूल हो गए
जाने सारे रिश्ते नाते कहाँ खो गए
कुछ समय से लगता है
मानो सब कुछ थम सा गया है
ज़िंदगी बस जी रहे हैं
कोरोना महामारी ने
जो बचे ख़ुचे रिश्ते थे
उन पर भी ग्रहण लगा दिया
जो वक्त हम दोस्तों के साथ
थोड़ा बिता लिया करते थे
अब बस फ़ोन तक ही सीमित हो गए
समय तेज़ी से बढ़ रहा है
दूरियाँ बढ़ रही हैं
देखने को तरसते हैं
नैन माँ बाबा के अपनी ही बेटी को
छूट गई देहरी बिटिया की
होते हुए भी माँ बाबा के
कैसा समय आया
न राखी मनी न त्यौहार कोई
जाने अब दीपों का त्योहार
कैसे मनाएँगे
क्या अबकि दीवाली भी
हम अकेले ही मनाएँगे

# मन के मोती

अपने मन में आने वाले विचारों को
मैंने अपने शब्द रूपी मोतियों से पिरो
माला बनाई है
सहेज रखा है अपने अंदर
उमड़ते घुमड़ते विचारों को
मोतियों की तरह
हमेशा यही सोचती हूँ
मैं अपने शब्दों के माध्यम से
अपने मन की बात मैं
सबके दिल तक पहुँचा सकूँ
समय की रफ़्तार बहुत तेज है
उसके साथ मैं
कदम से कदम मिला चल सकूँ
अपने विचारों को, अपने अनुभवों को
सबके साथ बाँट सकूँ
सार्थक हो मेरा लेखन
मैं अविरल लेखन करती रहूँ
कलम मेरी ताक़त है
ये ही तो है जो मेरे
मन के मोतियों को
शब्दों में पिरो एक सूत्र में बाँधती है
और मैं अपने मनोभावों को
काग़ज़ पर लिख पाती हूँ।

# हाथों में हाथ

पापा मैं आपका हाथ थाम
आगे बढ़ना चाहता हूँ,
जैसे सूर्य दिन चढ़ते ही निकलता है और,
अपना प्रकाश चारों ओर बिखेरता है।
उसके प्रकाश से
सारी धरा प्रकाशित हो जाती है,
तिमिर सारा छट जाता है।
वैसे ही, मैं भी आपका हाथ थाम,
आपके अनुभवों से
अपने अंदर के तिमिर को हटा
अपना जीवन, प्रकाशित करना चाहता हूँ।
बन सकूँ आपकी तरह
आपकी छाया बन,
मैं भी बिखेर सकूँ थोड़ा प्रकाश
जो आपसे पाया वो
बाँट सकूँ मैं भी
बस आपका साथ चाहिए
आपका हाथों में हाथ चाहिए
जो मेरा बल है
मिलती है आपके हाथों से
एक शक्ति जो प्रेरित करती है मुझे
हमेशा आगे बढ़ने के लिए
सूर्य की तरह चमकने के लिए

# ज़िद

जिद अच्छी है
लेकिन तब
जब वो किसी नेक कार्य के लिए हो
किसी का दिल दुखाकर
अपनी ज़िद पूरी करना अच्छा नहीं
जिद तो होना चाहिए
जब ज़िद पे आ जाओ
और इस कदर कि
किसी को इंसाफ़ दिला सको
किसी गिरते को उठा सको
किसी की भलाई कर सको
किसी गरीब की मदद कर सको
अन्याय के ख़िलाफ़ लड़ सको
किसी को बचा सको
किसी को सही दिशा
दिखाने की जिद अच्छी है
पर ऐसी जिद न करो
जिससे किसी को ठेस पहुँचे
किसी को उसके कारण
कठिनाइयाँ आएँ
किसी को नीचा दिखाकर
खुद आगे बढ़ जाना
ऐसी जिद अच्छी नहीं
हाँ भलाई के लिए की गई
हर जिद बहुत अच्छी है
किसी को सही दिशा दिखा जाए
वो ज़िद सच्ची और अच्छी है

# आदत

बच्चों की हर जिद पूरा कर
उन्हें सर पर चढ़ाना अच्छा नहीं
जो जायज़ हों
वो बेशक पूरी करो
पर तुरंत नहीं
उन्हें थोड़े में जीने की आदत डालो
माना सब कुछ तुम कर सकते हो
पर तंगी में रहना भी सिखाओ
आज नहीं पर बड़े होने पर
थोड़ा हाथ सिकोड़ जीना
बड़े फ़ायदे का सौदा होगा
क्योंकि जिसने तंगहाली में
जीना सीख लिया
फिर कभी न उसको रोना होगा
खुले हाथ ग़र छूट दी उनको
पड़ेगा पछताना बाद उनको
जिद अच्छी है पर
ये बात भी सच्ची है
जिसने थोड़े में जीना सीख लिया
उसका जीवन संघर्षमय नहीं
अपितु होगा राजा सा
क्योंकि उसको जीवन जीना आता है
वो हर हाल में खुश रह सकता है
औरों को भी खुश रख सकता है

# तुम्हारे लिए

धन्यभाग मेरे जो पाया
पति तुम्हारे जैसा
किया पुण्य था कोई मैंने
जो पाया साथ तुम्हारा है
इस धरा पे आई हूँ मैं
केवल तुम्हारे लिए

स्वामी हो तुम मेरे
मैं तुम्हारी स्वामिनी
रखा है आज मैंने
अखंड सौभाग्य का व्रत
तुम्हारे लिए

सजधज कर किया
सोलह श्रृँग़ार है आज
लगाई है हाथों में मेहंदी
सजाया है माँग में सिंदूर
केवल तुम्हारे लिए

सुंदर करवा सजाया है
बनाए हैं पकवान कई

सजा रखा है पूजा का थाल
चलनी दीपक है तैयार
अब इंतज़ार है चाँद का
सजी खड़ी ले पूजा का थाल
केवल तुम्हारे लिए

लम्बी आयु स्वस्थ्य जीवन हो
तुम्हारा माँगती यही दुआ
माता से मैं आज
करती मंगल कामना का
सौभाग्य का ये व्रत
केवल तुम्हारे लिए

# मैं और तुम

मैं और तुम,
एक ही कश्ती पर सवार,
जो है प्रेम की,
हमारे अटूट विश्वास की।
न तुम डूबोगे,
न डूबने दोगे मुझे,
न कभी डगेगा,
हमारा विश्वास।
तुम्हारा प्यारा सा साथ,
हमेशा देता है संबल मुझे।
तुम्हारा आलिंगन,
हर लेता है,
मेरी सारी पीड़ा,
भर देता है,
अपार आनंद से।
तुम और तुम्हारा साथ,
बड़ा अच्छा लगता है।
तुम भोर की लालिमा,
जिससे रोशन है,
मेरी ये दुनियाँ !

# माहिर

हाँ!
मैं कुशल गृहणी हूँ
हर काम में माहिर हूँ,
नहीं तुमसे कम
किसी भी बात में,
तो क्या हुआ ग़र,
मैं सम्भालती हूँ,
चौका चूल्हा,
पर रखती सबका ख़याल हूँ।
सुबह से लेकर रात तक,
सबके आगे पीछे घूमती हूँ,
सबकी इच्छाओं का,
मान रखती हूँ,
बड़ी कुशलता से,
सहेज रखा है मैंने,
अपना परिवार,
सबका प्यार और साथ।

# बड़े अच्छे लगते हो

हाँ!
मानती हूँ,
तुम करते हो,
हमारी हर ख्वाहिशें पूरी,
रखते हो हमारी,
हर ज़रूरत का ख़याल तुम,
अधूरी हूँ मैं तुम्हारे बिन,
तुम भी किसी बात में कम नहीं,
तुम हर क्षेत्र में माहिर हो,
घर बाहर सब कुछ,
अच्छे से संभाल लेते हो,
क्या हुआ ग़र कभी,
थोड़ा नाराज़ हो लेते हो,
पल भर में ही,
सब कुछ भूल,
आग़ोश में भर लेते हो,
सच कहूँ तुम चाहे लाख ग़ुस्सा करो,
बड़े अच्छे लगते हो।

# परिंदे

तुम परिंदे हो,
मगर मेरे सखा हो,
बिन कहे ही,
मेरी बातें समझ लेते हो।
उड़ना चाहती हूँ मैं भी,
तुम्हारी तरह,
छूना चाहती हूँ,
आसमाँ की ऊँचाइयाँ मैं भी।
सुनों!
ले चलो वहाँ,
जहाँ तुम रहते हो,
मिलता है जहाँ सुकून,
नहीं होता जहाँ शोरगुल।
मैं तुम्हारी तरह,
बँधनों से मुक्त हो,
जीना चाहती हूँ,
थोड़ी ख़ुशियाँ मैं,
अपनी झोली में
समेटना चाहती हूँ ।
क्या हुआ ग़र मैं,
उड़ नहीं सकती,
अपनी आशाओं को,

पूरा करना चाहती हूँ,
खुले आसमान तले
साँस लेना चाहती हूँ।
सच मानों,
जिस दिन सीख लिया,
खुद के लिए जीना,
खुद में ही खुश रहना,
उस दिन समझूँगी कि,
चार दीवारों के भी आज़ाद हूँ।

# चाहती हूँ

जीवन के हर लम्हे को, अपने आँचल में समेट
आशाओं को पर देना चाहती हूँ!!

तुम्हारे प्रेम को सदा, अपने समर्पण से
तुम्हें सदा ख़ुश रखना चाहती हूँ!!

अपनी बिटिया के, सपनों को पूरा कर
उसे आसमाँ में उड़ता हुआ देखना चाहती हूँ!!

बेटे की ख़ुशी में ख़ुश हो, उज्ज्वल भविष्य की कामना कर
अपने पिता की तरह बनाना चाहती हूँ!!

बहू कम बेटी को, अपनी परछाई बना
संस्कारों से भरना चाहती हूँ!!

जीवन की पथरीली राहों पर, अपनों साथ पा
जीवन को ख़ुशियों से भरना चाहती हूँ !!

हर सुख दुःख को, हर प्रेम भरे लम्हों को
अपने आँचल में समेट लेना चाहती हूँ!!

देखना चाहती हूँ , जीवंत होते हुए अपनों के ख़्वाबों को
उनकी ख़ुशी में ख़ुश होना चाहती हूँ!!

# कन्यादान

कन्यादान कर पिता हुए,
उऋण अपने कर्तव्यों से,
पर क्या सोचा एक पल,
जिस घर में दान दिया मेरा,
खुश हूँ या हूँ दुखी मैं??

मैं बेटी जो कभी थी उनकी,
एक पल में हो हूँ पराई मैं,
बाबुल का आँगन छोड़,
अपना लिया दूसरा आँगन मैंने,
पर क्या वो सहज अपना पाएँगे मुझे??

न वो घर था कभी मेरा,
न ये घर होगा कभी मेरा,
तानों की बौछारों में,
इस बात का कराया जाएगा,
एहसास मुझे सदा!!

मैं तो तन मन से रम जाऊँगी,
रंग में इन सबके,
क्या रंग पाएँगे रंग में मेरे कभी,

क्या मिल पाएँगे मुझे वो अधिकार,
जो मिलने चाहिए सभी??

इसी दुविधा में बीतेगी,
ज़िंदगी सारी मेरी,
कर सकूँ खुश सभी को,
हर कोशिश होगी मेरी,
क्या बन पाऊँगी मैं इनकी कभी??

# तुम कहाँ डूबे हुए हो

जब साथ हैं हम,
तो तुम कहाँ डूबे हुए हो,
हाथों में हाथ है हमारा,
तो फिर कहो,
क्या सोच रहे हो,
ये वक्त हमारा है,
न आने दो बीच हमारे,
अपने किन्ही ख़यालों को,
आओ गुम हो जाएँ हम,
एक दूजे के ख़यालों में,
खो जाएँ किसी दूसरी दुनियाँ में हम,
जहाँ न तुम हो न मैं,
हों तो सिर्फ़ हम,
एक जिस्म एक जान हो,
कुछ पल खुद के लिए जिएँ!!

दुनियाँ के आडंबरों से दूर,
उलझनों को छोड़,
सांसारिक मोह माया को त्याग,
कुछ ज्ञान अर्जित करें,
एक कदम आध्यतम की ओर बढ़ें,

कहो कहाँ डूबे हो तुम,
अंतर्मन की आवाज़ सुनों,
अपनी उलझनों को,
थोड़ा कम करो,
कह दो अगर हो कुछ,
मन में तुम्हारे,
यूँ खोए खोए से तुम,
अच्छे नहीं लगते,
कहते हैं कह देने से,
हल्का होता है मन,
आओ ज़रा हल्का कर लो मन,
ज़रा अपने अंतर्मन की सुन,
अपने ख़यालों से,
बाहर आ जाओ तुम!!

# सूना-सूना

तुम बिन,
लगता है,
ये घर सूना-सूना!!

गूँजती है,
आवाज़ तुम्हारी,
हर पल, हर क्षण!!

किसी काम में,
न लगता है,
अब मेरा मन!!

दादा दादी, पापा भी,
कहते हैं अब ये,
चली गई परी घर सूना कर!!

कभी कभी तो लगता है,
मानों बुला रही हो तुम,
मम्मा मम्मा की आवाज़ लगा रहीं हो तुम!!

छरिया, कलछी और कढ़ाई,
करते हैं याद सभी,
कहते हैं अब आओ जल्दी सम्भालो हमें फिर!!

शाम की चाय,
साथ बैठ कर पीना,
करते हैं मिस सभी!!

तुम्हारी छोटी सी चूक,
और मेरा डाँटना तुम्हें,
फिर प्यार से समझाना तुम्हें!!

हम तो करते याद हर पल तुम्हें,
क्या आती है याद तुम्हें भी,
या भूल गई माँ पा को पाते ही!!

जो कहते हैं बड़े,
हित छुपा होता उसमें भी,
ग्रहण कर उनको कर्तव्य निभाना तुम सभी!!

दिल पर न लेना कोई बात,
सीख यही मैं देती हूँ,
सुखद संसार मिलता है तभी!!

# युक्ति

अक्सर हम सोचते कुछ हैं,
होता कुछ है,
नित नए सपने संजोते हैं,
कुछ टूटते हैं,
कुछ होते पूरे हैं,
आजकल अपनों से दूरियाँ,
मजबूरी बन गई है,
अपनों की सुरक्षा,
ज़रूरी हो गई है,
न दोस्तों से मिलना होता है अब,
न होती है कोई बैठक आजकल,
उपाय तो कई हैं सूझते,
मिलने को दोस्तों से,
नई नई युक्ति आती है मगर,
लेकिन फिर वही डर,
सताता है हमको,
कहीं हमसे ही न हो,
असुरक्षा हमारे अपने को,
अगर कुछ हुआ,
तो यही रहेगा डर,
इससे अच्छा है,

करना थोड़ा सबर,
ये सोच फिर बहला लेते हैं हम सब,
दिल को अपने अपने,
फ़ोन पर ही घंटों,
बात कर दे देते है तसल्ली,
कभी कर लेते हैं विडीयो कॉल पर बातें,
आएगा वो भी दिन जल्दी,
जब न लगानी पड़ेगी कोई युक्ति,
मिलने के लिए अपनों से!!

# भेड़ाघाट

भेड़ाघाट प्रकृति की,
अनमोल देन है।
स्वच्छ उज्ज्वल धवल रूप ले,
बहती माँ नर्मदा यहाँ।
धुआँधार जलप्रपात,
जहाँ खूबसूरत धारा बहती है।
मन आह्लादित हो उठता है,
देख कर पावन माँ नर्मदा को,
चारों तरफ़ संगमरमरी चट्टानें,
उन पर पड़ती पानी की बौछारें,
मोतियों सा चमकता पानी,
लुभावना लगता दृश्य है,
जगह जगह से सैलानी आते,
यादें यहाँ से बटोर ले जाते,
ले जाते कुछ निशानियाँ यहाँ से,
जैसे अपने नाम लिखा,
या कोई सुंदर, संगमरमर की मूर्ति,
या कई आकर्षक,
संगमरमरी चट्टानों से बने,
शो पीस ले जाते,
भेड़ाघाट की बात निराली,

माँ नर्मदा की बात न्यारी,
धूप की तपन भी,
यहाँ लगती प्यारी,
क्योंकि उड़ता पानी जब,
पड़ता बदन पर,
पड़ जाती ठंडक तन को,
चाँदनी रात में,
जब पड़ती चाँद की किरणें धरा पर,
संगमरमरी चट्टानें और खूबसूरत लगती हैं तब,
कई फ़िल्मों की शूटिंग हुई यहाँ,
लिए सुंदर सुंदर दृश्य यहाँ,
बंदर कूदनी का नाम बड़ा,
आता जब जाते नाव से,
वहाँ बड़ा मज़ा,
क्या क्या मैं यहाँ की बात बताऊँ,
कम पड़ जाएँ लफ़्ज़ यहाँ,
शांति और सुकून है,
मस्ती और आनंद है,
धुआँधार हो या हो बंदर कूदनी,
सबकी अपनी है ख़ूबसूरती,
यहाँ की ख़ूबसूरती अद्वितीय है,
माँ नर्मदे की महिमा अतुलनीय है!!

# चलो हम बाती बन जाएँ

बाती जलती है
अपने अंदर के विकार को
धुएँ के रूप में
बाहर करती है
देती है उजाला
फैलाती है रोशनी
करती है
तिमिर को दूर वो
चलो हम बाती बन जाएँ
अपने अंदर के तिमिर को मिटा
अपना जीवन रोशन कर जाएँ
अंतस में जो भरा है
कड़वाहट, बुराई और दुश्मनी
उन सब को दूर कर
मन में प्रेम का दीप जलाएँ
चलो हम बाती बन जाएँ
अंतर्मन को स्वच्छ करें हम
ज्ञान का प्रकाश फैलाएँ
बैर भाव को दूर कर
मैत्री भाव को
मन में लाएँ

छुआ छूत और भेद भाव सब
हैं बेकार की बातें
आओ इनको दूर करें हम
एक कदम मानवता का बढ़ाएँ
चलो हम बाती बन जाएँ
अमीरी ग़रीबी के भेद मिटा
सबको एक सूत्र में बाँधे
क्या हिंदू क्या मुसलमान
क्या सिक्ख क्या ईसाई
हम सब तो है भाई भाई
जाति पाति को दूर करें हम
प्रेम की जोत जलाते हैं
जैसे दिया और बाती
न करते भेद
अमीर या गरीब का
न कोई जात न पात का
देते हैं रोशनी
सभी को समान
हम भी अपने ज्ञान चक्षु खोल
करें सबका सम्मान
न करें कभी किसी का अपमान
चलो हम बाती बन जाएँ

# बेक़ाबू

जीवन में अनियंत्रित,
कुछ भी नहीं,
न इच्छाएँ, न कामनाएँ,
सब कुछ,
हमारे वश में है,
इसे हम ही तो,
करते हैं अनियंत्रित,
अगर मन पर अंकुश लग जाए,
तो वो निरंकुश नहीं होगा,
जब वो हमारे वश में होगा,
तो सब नियंत्रण में होगा,
ये नहीं कि हम,
सपने न देखें,
किसी चीज की,
कामना न करें,
अवश्य करना चाहिए,
क्योंकि जब ख़्वाब होंगे,
तभी तो एक दिन,
सच होंगे,
उन्हें पूरा करने,
हम प्रयासरत होंगे,

पर हक़ीक़त में जीना सीखें,
क्योंकि जब ख़्वाब टूटते हैं,
हक़ीक़त का सामना होता है,
तो सबसे पहले दिल दुखता है,
इसीलिए तो मन का नियंत्रण,
बहुत आवश्यक है,
ये ज़रा सा बेक़ाबू हुआ,
और समस्यायें सामने आईं,
मन को करो क़ाबू,
न होने दो इसे,
बेक़ाबू,
इच्छाओं को करो,
नियंत्रित,
ज़िंदगी जीयो शान से,
भटको न राह से,
भावनाओं को रखो,
संभाल के,
सुखी जीवन का यही है मंत्र,
खुद रहो नियंत्रित,
मन को करो क़ाबू,

# रंजिश

कैसे सह जाते हैं लोग,
अपनों से अपनो की दूरियाँ,
परे है समझ के।
पर हक़ीक़त यही है,
आज हर इंसान स्वार्थी,हो जी रहा हैं,
अपनों से ही दुश्मनी, निभा रहा है।
जाने क्यों वो??
समझ न पा रहा,
नहीं रखा है, कुछ बैर-भाव में।
ज़िंदगी है, चार दिन की,
जाने कब, किसकी आँखे हो जाएँ बंद।
समय बड़ा बलवान है,
न काम आएगा,
रुपया पैसा, न कोई घमंड।
काम आएगा, कर्म ही तेरा,
सखी हो या सहेली,
बहन हो या भाई,
सबसे मित्रता रखो।
न रखो रंजिशें, दिलों में, जरा भी,
प्रेम भाव बनाए रखो।
जब अंत समय आएगा,

सिर्फ़ मन में,
पछतावा ही, रह जाएगा।
ये सोच ज़िंदगी भर,
ख़ुशी से, जी न पाओगे,
जीते जी, न रख सके प्रेम,
बिछड़ने के बाद,
उनकी याद सताएगी।
गल्तियाँ सब से होती हैं,
जरा माफ़ कर,
गले से जब, तुम लगाओगे,
एक अजीब सा, सुकून तुम पाओगे।
कभी कोई, मजबूरी भी होती है,
इसे तुम कब समझ पाओगे??
बेवजह ही दिल में,
रंजिशे न पालो,
न निभाओ, दुश्मनी अपनों से,
समय तो ऐसा, आया है,
हो सके तो दुश्मनों को,
हँस के गले,
लगा कर तो देखो,
दुश्मन भी,
पल में दोस्त बन जाएँगे !!

# ये वादा रहा तुमसे

सुनों!!
आज, ये वादा रहा तुमसे
तुमने सब कुछ,
किया समर्पित, मुझपे,
बिना कुछ कहे, बिन माँगे,
हर मुराद की, पूरी तुमने,
ऐसी कोई, ख्वाहिश नहीं,
जो हो अधूरी मेरी,
हर सपना मेरा,
जिया साथ तुमने,
हर मुश्किल में,
थामा हाथ मेरा,
निभाया साथ मेरा,
आज मैं, करती हूँ,
सर्वस्व न्योछावर तुमपे,
हर मुश्किल में,
निभाऊँगी साथ तुम्हारा,
बिन कुछ कहे,
न कोई सवाल होगा,
न कोई शिकवे होंगे,
मेरे घर के बाग़बान हो तुम,
ज़िंदगी वार दूँगी तुमपे,
हँसते हँसते !!

# उपहार

चलो चलो जल्दी चलो,
भागो भागो साँता आया,
हम सब बच्चों के लिए,
नए नए उपहार वो लाया।

टीना, मीना, मुन्नी, बबलू,
आओ घर के बाहर जल्दी,
खेल खिलौने टॉफ़ी लाया,
नए नए उपहार वो लाया।

लाल सफ़ेद कपड़े हैं पहने,
साथ में पोटली लटकाया,
हाथ भरे हैं उपहारों से,
सच में देखो आके,
नए नए उपहार वो लाया।

रात सपने में जो देखा था मैंने,
सच हुआ वो सपना मेरा,
बिल्कुल ऐसे ही दिखता था
सैंटा था वो अपना,
नए नए उपहार वो लाया।

# शून्य

ज़िंदगी की शुरुआत ही,
शून्य से हुई,
शून्य को कभी भरना चाहा,
कभी शून्य से निकलना!!
कभी किसी ने कहा,
तुम अधूरे हो,
हमारे बिना, जीवन है शून्य तुम्हारा,
पर पता नहीं था उनको,
वो ग़लतफ़हमी थी उनकी,
वो खुद कुछ न थे हमारे बिना!!
कश्मकश बड़ी है ज़िंदगी में,
ज़िंदगी भी एक पहेली है,
जो आज ज़ीरो है,
वही कल का हीरो है,
क्योंकि उसमें है,
लगन, कुछ कर गुजरने की क्षमता,
साबित करने की खुद को!!
जो हीरो है, उसमें अकड़ है,
अकड़ चलती नहीं,
रुपया खनकता नहीं,
खनखनाहट तो सिक्कों में होती है जनाब,
आज जो दिखता है, वो बिकता है!!
शून्य चाहे जितने लगा लो,
पैसा काम आता नही!!

# मनोबल

तुमने हमेशा मेरा मनोबल बढ़ाया है,
टूटते हुए मेरे हर ख़्वाब को सजाया है,
गिरने न दिए आँखों से आँसू,
गिरने के पहले ही उन्हें मोतियों सा संभाला है!!

जो कभी झलके भी तो वो थे ख़ुशी के आंसू,
मेरी हर ख़ुशी को तुमने अपनी ख़ुशी बनाया है,
जीने की इच्छाशक्ति भले ही प्रबल थी मेरी,
पर तब भी मनोबल तो तुमने ही बढ़ाया है!!

वरना टूट कर बिखर गए होते हम,
अगर साथ न निभाते हमारा तुम,
मेरे हर दुःख में तुम साथ खड़े रहे,
मेरे दुःख को सुख में बदलते रहे!!

खुश नसीब हूँ मैं जो पाया है मैंने,
जीवन साथी तुम सा,
जो हर कदम थाम चलता है हाथ मेरा,
जनता है हर हाल मेरे दिल का!!

# ये मौसम बेदर्दी

हाय रे !
ये मौसम बेदर्दी,
कभी गर्मी, कभी सर्दी,
करे भी तो क्या करें,
कभी निकाली चादर,
तो कभी पल्ली,
हाय रे!
ये मौसम बेदर्दी!!
कभी टपकता है, नाक से पानी,
कभी टपकता माथे पसीना,
धूप में बैठो, लगे गर्मी,
कमरे में लगे ठंडी,
हाय रे !
ये मौसम बेदर्दी!!
कभी छाता है, घना कोहरा,
कभी बरसता टिप टिप पानी,
कभी धूप तो, कभी छाँव है,
क्या करे इंसान है,
ये मौसम बड़ा बेमान है,
हाय रे
ये मौसम बेदर्दी!!

# मिलना-जुलना

बहुत रह बढ़ गईं हैं दूरियाँ,
अब ज़रूरी हो गया मिलना-जुलना,
ये बीमारियों का सिलसिला,
चलता रहेगा ना जाने कब तक,
बैठे रहेंगे हम भी घर पर कब तक!
अब तो घर से बाहर निकलना पड़ेगा,
अपनों से मिलने, छोटी छोटी ख़ुशियाँ बटोरने,
थोड़ा बतियाने इधर उधर की,
मिलना-जुलना पड़ेगा!
बहुत रह लिया घर में,
न हुई कोई मस्ती,
न हुई कोई किट्टी पार्टी घर पे,
डरना छोड़ो अब तो,
सीखो लड़ना परिस्थितियों से अब तो!
चलो प्लान कर लें, अब एक पिकनिक,
या हो जाए एक डब्बा पार्टी,
मिलना-जुलना भी होगा,
होगी थोड़ी मस्ती!!
बैठेंगे सब मिल कुल कर,
करेंगे थोड़ा हो हल्ला,
ख़ीचेंगे टाँग किसी की,
थोड़ा हँसी ठिठोली होगा
जम के डी जे पे डाँस होगा,
जाम मिलेगी मस्तानों की टोली!!

# क़ीमती

माँ के साथ बिताया,
हर लम्हा क़ीमती होता है,
माँ के हाथ का खाना,
बड़ा लज़ीज़ होता है,
वो माँ ही होती है,
जो बिन कहे,
सब समझ जाती है,
बेटी के घर आते ही,
सारा घर सर पर उठा लेती है,
चाहे हो कितनी भी तकलीफ़,
माँ का स्पर्श पा,
पल में दूर हो जाती है,
माँ का प्यार,
बड़ा बेशक़ीमती होता है,
माँ सा न दूजा कोई होता है,
माँ के हाथों में जादू होता है,
माँ के आँचल में,
बड़ा सुकून होता है,
माँ का दुलार,
नसीब वालों को मिलता है,
माँ सा न कोई प्यारा होता है !!

# विघ्न

विघ्न तो
कई आएँगे,
ग़र हो
हौसले बुलंद,
रास्ते खुद बख़ुद
बन जाएँगे।

डरना न कभी
परेशानियों से,
डिगना न कभी
अपने इरादों से,
इरादे नेक हो तो
मंज़िल पे पहुँच ही जाएँगे।

प्रेम से
दिलों को जीत लो,
नफ़रतें दिल में न
पनपने दो,
रोक न कोई सकेगा
बाधाएँ न कोई आएँ।

# कुछ तो लोग कहेंगे

हम कुछ भी करना चाहे,
अपने आपको बदलना चाहें,
कोई नई शुरुआत करना चाहें,
ये बात हमारा कभी पीछा नहीं छोड़ती,
लोग क्या कहेंगे,
हम ये भूल जाते हैं,
कुछ तो लोग कहेंगे,
लोगों का काम है कहना,
हमें उनकी बातों से डरना नहीं है,
बल्कि उनका सामना करना है,
तभी हम आगे बढ़ पाएँगे,
जमाने के साथ चल पाएँगे,
नहीं तो सारी उम्र,
यही सोचते बैठे रह जाएँगे,
लोग क्या कहेंगे????
और जहाँ है,
जैसे हैं,
वैसे ही जीवन भर रह जाएँगे,
सोचो मत,
करके देखो,
क्योंकि???
कुछ तो लोग कहेंगे
लोगों का काम है कहना !!
कुछ तो लोग कहेंगे

कुछ उसने कहा,
कुछ मैंने कहा,
वो कहती रही,
मैं सुनता रहा,
उसे दुनियाँ का डर था,
मैं निर्भीक अडिग खड़ा रहा,
मैंने प्यार जो किया था उसे,
दिल से चाहा था,
प्यार करना कोई बुरा तो नहीं,
उसे डर था जमाने का,
डर था लोग क्या कहेंगे???
मैंने कहा!
छोड़ो बेकार की बातें,
कुछ तो लोग कहेंगे
लोगों का काम है कहना,
लोगों के डर से क्या
रहना होगा हमें,
जीवन भर अकेला???
लोग तो वैसे भी,
दो प्रेमियों के बीच,
होते हैं दीवार,
हमें तोड़ना है ये दीवार
करना है सामना,
संसार का,
होके निर्भीक, निडर!!

# प्रीत

क्या कहूँ इसे,
प्रीत, प्रेम या प्यार
एक ही शहर के रहने वाले,
मिले नहीं मगर कभी,
हुई मुलाक़ात,
बीस वर्ष पहले,
वो भी ओरिफ़्लेम के कारण!!
पहले थी देवरानी,
एक दो मुलाक़ातों में,
देवरानी से सखा बन गई,
मित्रता धीरे धीरे,
जाने कब प्रगाड़ हो गई!!
बँध गए प्रीत के बँधन में,
संग प्रीति के साथ,
अब मिलो नहीं दिन दो चार तो,
लगता है जैसे,
मिले नहीं वर्षों से!!
सबको अपने प्रेम के बँधन में बाँध,
अपने नाम को सार्थक करती है,
हमारी आयरन लेडी,
न जाने कितनों का मार्गप्रशस्त करती है!!

न दिन को चैन है इसे,
न रात को आराम,
एक के बाद एक,
बना रही नए ये कीर्तिमान!!
सबकी प्रेरणास्त्रोत है,
करती है काम महान,
रच दिया हिंदी माता पर गान इसने,
किया सचित्र हिंदी माँ को,
बढ़ाया मान इसने माँ हिंदी का!!
वारासिवनी की शान है,
हर कष्ट सह,
ग़मों में मुस्कुराती है,
क्योंकि प्रीति इसका नाम है!!!
नित नए नए विचारों को,
बुनती है सपनों के रूप में,
देती है आकर उन्हें फिर,
मिल मानू के संग में!!
साकार करते हैं उन सपनों को
तनु, जयति, जैनम और समकित
कभी कभी हम भी शामिल हो जाते हैं,
उनके संग में!!

# दिल के कोरे काग़ज़ पर

बहुत सोचा क्या लिखूँ,
अपने अरमान जो संजो रखे थे मैंने,
बचपन से अपनी यादों में,
या फिर लिखूँ वो ख़्वाब,
जो देखे थे,
तुम संग बँधन में बँधने पर,
इस दिल के कोरे काग़ज़ पर
तुम्हीं कहो,
अपने कर्तव्यों को पूरा करते करते,
रह गए सब अधूरे,
कभी सोचती भी हूँ करने इन्हें पूरा,
बैठती हूँ कभी लिखने कुछ,
अपने दिल के कोरे काग़ज़ पर,
तो पाती हूँ फिर अपने को घिरा हुआ,
कभी घर की ज़िम्मेदारियों से,
कभी बच्चों की फ़रमाइशों से,
कभी फ़ुरसत ही नहीं मिलती,
कि लिख सकूँ,
अपने ख़्वाबों को,
अरमानों को,
तो बस लिख लेती हूँ,

फिर तुम्हारा नाम,
क्योंकि ज़िंदगी तुमसे है,
तुम्हीं वो हक़ीक़त हो,
जो करते हो मेरे हर ख़्वाब पूरे,
तो कहो क्यों कर लिखूँ,
फिर कुछ और ही,
अपने दिल के कोरे काग़ज़ पर,
सिवा नाम के तुम्हारे,
जब ज़िंदगी ही तुम्हारे नाम कर दी!!

# पथभ्रष्ट

सच्चाई की राह पर चल,
बढ़ते जाना जीवन में,
न रुकना तब तक,
जब तक पहुँचो न मंज़िल में।

राह में रोढ़े कई आएँगे,
करेंगे कई पथभ्रष्ट तुम्हें,
दुनियाँ में ऐसे कम ही हैं जो,
करेंगे तुम्हारा मार्गप्रशस्त।

न गुमराह होना तुम,
बातों में आकर किसी की,
सच्चे का साथी कोई नहीं,
यहाँ झूठे के साथी सब हैं।

मीठी मीठी बातों में,
न फँसना तुम कभी,
यहाँ आस्तीन में साँप पलते हैं,
धोखा न खा जाना तुम कभी।

सम्भाल सम्भाल कर रखना कदम,
जीवन की डगर है कठिन,
यहाँ कदम कदम पर काँटें हैं,
चुभ न जाएँ ये कहीं।

अपने उसूलों पर सदा टिके रहना,
न होना कभी पथभ्रमित,
कुछ भड़काएँगे, कुछ उकसाएँगे,
होने मार्ग से पथभ्रमित॥

# चंदन

चंदन सा बन जीवन महका जाओ,
डसने वाले नाग कई मिलेंगे यहाँ,
अपनी हिफ़ाज़त खुद करना सीख जाओ,
जो महकेगा चंदन सा,
होगी जितनी प्रसिद्धि तुम्हारी,
उतने ही मिलेंगे करने वाले,
तुम्हारी ज़िंदगी में करने काड़ी,
इन सबसे बचते चलो,
संभल संभल कर कदम तुम रखो,
जैसे चंदन के पेड़ में सर्प लिपटते हैं,
पर उसे अपने विष से,
नहीं बना पाते विषैला,
वैसे ही हर अच्छा इंसान,
होता है वृक्ष चंदन का,
नहीं बना पाती उसे,
बुरे संगत की संगति बुरी,
लाख बुरे के साथ रह,
नहीं जाती उसकी अच्छाई कभी!!

# तुम हो तो मैं हूँ

ऐसा कई बार हो जाता है,
जब हम एक दूसरे से,
नाराज़ हो जाते हैं,
कभी कभी तो,
हम दोनों ही ग़ुस्से में,
मौन हो जाते है,
पर रह कुछ पल भी नहीं पाते,
एक दूजे के बिना,
और टूट जाता है
हमारा मौन,
ये कह कर कि,
तुम हो तो मैं हूँ
फिर एक दूजे की,
बाहों में समा,
भूल जाते हैं,
सारे गिले शिकवे,
एक वादे के साथ,
फिर न होंगे नाराज़ हम,
एक दूसरे से,
कभी न होगा मौन,
हम दोनों के बीच
होगी सिर्फ़ प्रेम की बातें,

हम दोनों के बीच!!
बाँध मेरे पर,
गर तुम सोचते हो,
कर लिया वश में मुझे,
भुलरावे में न आना तुम इस,
चाहे बाँध लो लाख पर तुम मेरे!
नहीं आने वाली हाथ मैं तेरे,
उड़ जाऊँगी एक दिन मैं,
महत्वाकांक्षाएँ हैं बड़ी मेरी,
सपनों के पर न बाँध पाओगे तुम मेरे!
भरूँगी ऊँची उड़ान जिस दिन,
समझ भी न पाओगे तुम,
न बँधन कोई बाँध पाएगा मुझे,
न काम आएगी तुम्हारी कोई चालाकी,
सपनों के पर लगा,
कर लूँगी सारा आकाश वश में!
एक दिन वो भी आएगा,
गहन तिमिर को हटा,
उजाला नज़र आएगा,
आएगी उम्मीद की किरण नज़र,
आएगा कोई मेरा भी रखवाला,
कर जाएगा बँधन मुक्त वो!

# हर्ष

हर्ष से ख़ुशी से प्रफुल्लित था मन,
देख प्रकृति के नज़ारे झूम रहा था मन,
खिले थे कहीं गुलाब लाल और पीले,
कहीं खिले थे गुलाबी और नीले।
बिखर रही थी ख़ुशबू कहीं,
गुलाब की गुलाबी,
कहीं महक रही थी,
बेला और चम्पा, चमेली,
कहीं धरती की दिख रही थी पीली,
खिले थे गोद में गेंदा पीले पीले,
कही लहलहा रही थी सरसों पीली।
सारी प्रकृति खुश थी,
भरी थी उल्लास से आनंदित थी
छाई थी छटा अद्भुत,
नज़ारे थे बड़े अद्भुत।
धरती का कोना कोना,
महक रहा था,
गलीचे सा सजा हुआ था,
अनुपम छटा बिखर रही थी,
हर्ष से भरा हुआ था,
मन का हर कोना कोना!!

# किसी मोड़ पर

हाँ !
है मुझे यक़ीन,
तुम मिलोगे कहीं,
किसी मोड़ पर,
फिर होंगी मुलाक़ातें,
बातें बैठ होंगी यमुना तट पर!!
तुम फिर एक बार,
बजाओगे वही मधुर,
बाँसुरी की धुन,
जिसे सुन खो जाऊँगी,
सुध बुध अपनी,
होगा रास फिर एक बार,
पूरा ब्रजमण्डल झूम उठेगा!!
गोपियाँ करेंगी श्रृँगार,
लाएँगी भर भर मटकी माखन,
खाने को तुम्हारे,
होगी हँसी ठिठौली,
संग गोप ग्वाल!!

# वसंत

वसंत की ठंडी ठंडी बयार चल रही,
कहीं गुनगुनी धूप,
कहीं बदली छा रही,
ऋतुओं का राजा वसंत,
ले आया ख़ुशियाँ अपार,
फूले हैं पलाश कानन में,
सारा वन उपवन हो गया है लाल,
कोयल कूँक रही बागों में,
आ गई बौर अमवा की डार,
प्रिय का प्रियतम से मिलने का,
ख़त्म हुआ इंतज़ार!!
पेड़ों पर नई नई कोंपलें आ गईं,
चारो तरफ़ हरियाली छा गई,
नई नई पत्तियों से आच्छादित हो,
सुंदर दिखते वृक्ष, कहीं महके सेवंती,
कहीं गुलाब की ख़ुशबू बिखर रही,
कहीं महके गेंदा, कहीं जूही, चम्पा, चमेली,
कहीं खेतों में सरसों लहलहाए पीली,
कहीं पलाश की है छाई लाली,
वन उपवन सब खिल उठे,
ऋतुराज वसंत के आने से,
झूम झूम के नाच रहे सब,
मानों उत्सव आज मना रहे सब !!

# जीना इसी का नाम है

मुश्किलें चाहे लाख आएँ,
तूफ़ानों से न घबराएँ,
दुख में सुख का अनुभव हो,
सुख में भी भगवान का सुमिरन हो!
जीना इसी का नाम है

यही सोच जन जन की होगी,
हर मुश्किल फिर आसान होगी,
दुख की जीवन में न जगह होगी,
न गिले होंगे न शिकवे कोई,
जीने की राह सरल होगी!
जीना इसी का नाम है

जीना यहाँ हैं मरना यहाँ,
इसके सिवा जाना कहाँ,
हँस के जीयो या रो रो के
ज़िंदगी बितानी है तुमको यहाँ!
जीना इसी का नाम है

बैर करोगे बैर मिलेगा,
भला करोगे भला तुम्हारा होगा,

जैसी करनी वैसी भरनी,
जो बोओगे वही पाओगे,
प्रेम करोगे प्रेम मिलेगा!
जीना इसी का नाम है

गुलाब काँटों में खिलता है,
मगर ख़ुशबू बिखरेता है,
कभी भगवान कभी राजा के,
सिर का ताज बनता है,
कभी मेहरुन्निसा के बालों में सजता है!
जीना यहाँ मरना यहाँ

राहें पथरीली भी हों तो क्या,
मुश्किलें लाख आएँ भी तो क्या,
ग़मों को गले लगा के जियो,
रास्ते अपने आप बन जाएँगे,
किसी के सामने थोड़ा झुकना भी पड़े तो क्या!
जीना इसी का नाम है...।

# हिम्मत न खोना

जब राह हो काँटों भरी,
साथ न हो कोई,
चारों ओर अँधियारा हो,
राह न नज़र आए कोई,
तुम हिम्मत न खोना,
उस अंधकार से भी,
दिखाई देगी,
रोशनी कोई!
चल पड़ना उसके पीछे,
अंधकार को चीर,
प्रकाश मिल जाएगा,
मिल जाएगी राह कोई,
आशा न छोड़ना कभी,
विश्वास सदा रखना,
जब ईश्वर हो साथ,
तो क्या बिगाड़ पाएगा कोई!!

# हिम्मत न हारना

माँ तुम्हीं कहती थी न,
ससुराल में सबसे,
घुलमिल कर रहना,
कभी न ऊँची आवाज़,
मुँह से निकालना,
सबका तुम मान करना,
पापा का माँ रखना,
कभी ऊँच नीच हो जाए तो,
हिम्मत न हारना
जो संस्कार दिए मैंने,
उनको याद रखना,
कभी न माता पिता का,
सर झुकने देना,
थोड़ा सह लेना,
दर्द तुम,
देखना फिर होंगी,
हज़ार ख़ुशियाँ दामन में,
तुम्हारे,
थोड़ा कष्ट ज़रूर होगा,
पर याद आएँगी मेरी बातें,
सच माँ,

कितना सही कहतीं थीं तुम,
थोड़ा सा कष्ट सह,
पाई हैं आज मैंने,
ढेरों ख़ुशियाँ,
कमाया है नाम आज,
तुम्हारे ही दिए,
संस्कारों के कारण,
जब जब मायूस हुई,
तुमने हमेशा सहारा दिया,
ये कह कर,
हिम्मत न हारना बेटा,
ये वक्त भी निकल जाएगा,
ढाँढस तुमने बँधाया था!!

# क़ाबिलियत

कभी किसी नारी की
क्षमता का आँकलन न करना
कभी करो तो उससे पहले
खुद को आँक लेना
क्या तुम उसके काबिल हो या नहीं
क्योंकि हर हाल में तुम सदा
उससे पीछे ही नज़र आओगे
कभी सोचा है
जिस नारी की क़ाबिलियत पर
करते हो सदा तानाकशी
वो नारी ही है जो
तुम्हारा हर पग पग पर साथ निभाती है
वो नारी ही है जो सदा
तुम्हारी हर बात बिना कहे समझ जाती है
सब कुछ सहकर
उफ़्फ़ तक न मुँह से निकालती है
सुबह भोर से लेकर रात तक तुम्हारे हर काम
बिन चाहत करती जाती है
अपना सर्वस्व लूटा देती है
पर बदले में कुछ नहीं चाहती है
निरंतर चलती रहती है
थकती नहीं, फिर भी सदा
उसकी क्षमता, क़ाबिलियत और योग्यता पर
प्रश्नचिन्ह ही लगाए जाते है

# रोना-धोना

लोग समझते हैं
नारी को केवल
रोना-धोना ही आता है
पर ऐसा नहीं है
बिल्कुल भी
नारी जब तक
सह सकती है
रोती रहती है
जब पानी सिर से
ऊपर हो जाए तो
धोने से किसी को
न डरती है
न वो लाचार है
न है बेचारी ही
वो स्वयं के साथ
उठाती घर का बोझ भारी भी
ज़िम्मेदारियों को निभाने में
लगी रहती दिन रात
न करती कोई शिकवा शिकायत
तो लेती है अकेले में
बुरी लगे जब कोई बात

न दिखाती है कभी
अपने आँसू
सदा छिपाती घर की
हर वो बात
वो अबला नहीं
सबल है वो
तभी तो उठाती
सबका बोझ

# राम

हे राम !
तुम जन जन के प्यारे हो
रघुकुल राज दुलारे हो
कैकेयी ने दिया वनवास
हँस स्वीकार करने वाले हो
पिता ने दिया वचन
तुम वचन निभाने वाले हो
तुम हो महान कौशल्या दुलारे
खाए जूठे बेर तुमने शबरी के
तारी अहिल्या नारी है
तुम तो तारणहारी हो
बैठ नाव केवट की
जीवन नैय्या तुमने उसकी तारी है
पाया तुमने हनुमान सा भक्त
जिसने राम भक्ति गाई है
कण कण में जिसके राम बसे
वो तो केवल हनुमान है
जिसने राम को महिमा बताई है
राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम हो
जन जन के तुम राम बने
क्योंकि पाई तुमने
कैकेयी सी माई है
जिनके कारण मिला वनवास

पर तुम बन गए जन जन को आस
किया कितनों का ही उद्धार है
बुझाई कितने नैनों की प्यास
नारी का सदा सम्मान किया
माँ सीता को तुमने वरण किया
माँ सीता का हरण हुआ
वन वन भटके खोज में उनकी
रावण का भी अंत किया
लौटे अयोध्या नगरी अपनी
जन जन ने जयगान किया
जय श्री राम जय श्री राम के
नारों से गूँज उठी अयोध्या नगरी
आज फिर वो दिन आया
सारे देश में ख़ुशियों को लहर छाई है
चाँदी की ईटों से निर्माण कार्य
शुरु होने वाला है
दिव्य और भव्य मंदिर अब
श्री राम लला का मंदिर बनने वाला है
हे राम! तुम सम्भालो फिर बाग डोर
ले आओ तुम राम राज्य
जन जन के प्यारे जन जन के दुलारे राम
गूँज रहा है श्री राम राम के घोष से
आज सारा हिंदुस्तान

# मौन- एक स्त्री की ज़ुबानी

स्त्री हूँ
इसलिए मौन की
परिभाषा बख़ूबी
जानती हूँ
एक स्त्री
जब तक ज़ुल्म सहती है
जब तक चुप रहती है
सब्र का
इम्तिहान न लेना कभी
ये जो टूट गया
क़हर ढा जाएगा
हो जाएगा
चूर चूर
हर शक्स का घमंड
डूब जाएगी सारी धरा
अश्रु से
एक स्त्री के देह से
यूँ न खेलना
न ढाना सितम उस पर
ये मत भूलना कभी
नारी सब पर भारी

चण्डी गर बन गई
वार न जाए फिर उसका ख़ाली
प्यार की मूरत है
दया का सागर है स्त्री
कहीं चण्डी दुर्गा काली भी है स्त्री
माँ बन दुलारती है
बच्चों को
कही दुर्गा बन संहार करती है
दानव का
दोनों ही रूप में ख़ूब सजती है
जब तक ख़ामोश है
अच्छी लगती है
जब बोलती है
अच्छे अच्छों को
बक्शती नहीं स्त्री

# मन्नत का धागा

हमारे प्यार को,
किसी की, नज़र न लगे,
इसीलिए तो, बाँध आई हूँ,
मन्नत का धागा
बड़े प्यार से, सहेज रखा है,
हमने अपने रिश्ते को,
माता पिता की छत्र छाया
कहाँ नसीब होती है, हर किसी को,
इसीलिए डरती हूँ,
हमेशा दुआ यही करती हूँ,
बना रहे साथ, हम सब का यूँ ही,
खुशहाल रहे परिवार सदा ही,
आशीर्वाद सदा मिले, माँ बाबूजी का,
यही कामना कर, बाँध आई फिर,
मन्नत का धागा
जितनी भी ज़िंदगी है,
जी भर जिएँ,
ख़ुशियाँ मिले भर भर झोली,
हर कामना हो उनकी पूरी,
जिस आस से मिला है जीवन उन्हें,
वो ख्वाहिश हो, उनकी पूरी!!

# बूढ़ी माँ की आस

तुझे दुनियाँ में लाने को,
कितने मंदिर मस्जिद,
गुरुद्वारे के चक्कर,
काटे हैं,
तेरी सलामती के लिए,
हर जगह मत्थे टेके हैं,
जाने कितनी जगह,
मन्नत का धागा
बाँधा था,
तब कहीं जाकर,
तुझे मैंने पाया था!
मेरी हर पूजा,
तेरे लिए होती थी,
सुबह से शाम,
बस तेरे लिए सोचती थी,
तू जरा सा बीमार हो जाता ग़र,
सारी रात गोद में ले,
तुझे बैठी रहती थी,
आज मुझे ज़रूरत है तेरी,
पर तेरे पास वक्त नहीं,
शायद इतना भी नहीं कि,

तू मेरे लिए माँग सके,
मन्नत ही कोई,
बाँध के मन्नत का धागा
जैसे बाँधा था,
मैंने तेरे लिए,
मुझे छोड़ वृद्धाश्रम में,
तू चैन की नींद सोता है,
मैं आज भी,
तेरी फ़िक्र में,
सारी रात करवट बदलती हूँ,
दुआओं में तेरे लिए,
भगवान से दुआ माँग लेती हूँ,
कभी वक्त मिले,
मेरी टोह ले लेना,
मेरे मरने से पहले,
बस एक झलक,
आकर मुझे देख लेना!!

# चोट

दुख तो तब होता,
जब अपने ही दिल दुखाते हैं,
तब चोट सीधे,
दिल पर लगती है,
जिसकी कोई,
मरहम नहीं होती,
वो ज़ख़्म कभी,
भर नहीं पाते हैं!
दर्द बहुत होता है दिल में,
टीस रह रह के उठती है,
आईना टूटने से,
पड़ जाती है,
दरार जैसे,
वो अपनो के बीच,
खुद दरार बन जाते हैं,
चुभता है जब,
टुकड़ा काँच का कोई,
वैसी चुभन बन जाते हैं,
रुठे को कोई मना भी ले लेकिन,
जब चोट दिल पे लगती है,
वो दिल से उतर जाते हैं!!

# कुछ बात तो है

कुछ बात तो है तुममें,
जो लोगों के दिलों में बसते हो,
हर कोई तुम्हारा,
दीवाना बना फिरता है,
चाहे हो कोई गोप ग्वाल,
हो चाहे कोई गोपियाँ,
हर ब्रजवासियों के मन में बसते हो,
बच्चे हो या बूढ़े,
सभी को प्यारे लगते हो,
राधा हो या मीरा,
सत्यभामा हो या रुक्मणी,
सभी करतीं हैं तुमसे प्रेम,
भाव भले हों सबके अलग अलग पर,
राज दिलों में इनके करते हो,
ब्रज नारियों को तुम बहुत सताते हो,
डाँट भी उनकी खाते हो,
फोड़ते हो मटकियाँ उनकी,
माखन भी खूब चुराते हो,
फिर भी जाने क्या बात है तुममें,
माखन रोज़ ले आती हैं,
प्रेम से तुम्हें खिलाती हैं,
कुछ बात तो है तुममें,
राधा में तुम,
तूममें राधा बसती है!!

# विलंब

सुनों!
मेरे जाने के पहले,
बस एक बार,
हाँ बस एक बार,
तुम मुझसे मिलने आना,
देखो कहीं देर न हो जाए,
तुम आओ और मैं चली जाऊँ,
इतना विलंब न कर लेना,
अभी भी हमारे रिश्ते में,
एक आस बाक़ी है,
मैं तो तुम्हारी प्यार भरी,
यादों के सहारे जी रही थी अब तक,
न जाने ऐसा क्या हुआ,
जो छोड़ तुम मुझे चले गए,
खुद से ज़्यादा,
चाहा था तुम्हें,
तुम्हारी हर पसंद,
न पसंद का ख़याल रखा था सदा,
फिर जाने क्यों रूठ गए,
शायद मैं ही तुम्हारे काबिल न थी,
सुनों!
जबसे तुम्हारे आने की खनर मिली है मुझे,

बस एक झलक देखने की,
उम्मीद जगी है मन में,
मैं मिलन न मिलूँ तुम्हें,
तुम्हारी यादों को संजो रखा है मैंने,
तुम्हारा हर सामान क़रीने से रखा है,
बिल्कुल वैसे ही जैसे तुम्हें था पसंद,
आज बिल्कुल वैसा ही,
किया है श्रृँगार,
जैसा तुम चाहते थे,
वही तुम्हारी पसंद की पहनी है साड़ी,
लगाया है मोगरे का गजरा,
होठों पे लगाई है लाली,
आँखों में लगाया है काजल,
क्यों इतना सताते हो तुम,
मेरे जाने से पहले,
मेरी ख़्वाहिश को पूरा कर जाओ तुम,
अंतिम कुछ साँसे बची हैं मेरी,
चाहती हूँ बाहों में दम तोड़ जाऊँ तुम्हारी,
गोद में सर हो मेरा,
मेरे माथे पे हाथ हो तेरा,
तेरे हाथों में हाथ रख,
अंतिम साँस मैं ले पाऊँ!!!

# दिल कहता है भूल जा

तुम्हारे दिए हुए दर्द,
भूल जाऊँ यही सोचती हूँ हमेशा,
दिल कहता है भूल जा,
सब कुछ पीछे छोड़,
आगे बढ़ जा,
पर क्या करूँ,
जब भी एकांत में होती हूँ,
तुम्हारी प्यार भरी बातें,
भूल नहीं पाती,
क्या हुआ हम अलग हुए,
थी कुछ मजबूरियाँ तुम्हारी,
जो हम बिछड़ गए,
पर कैसे भूला दूँ,
उन दिनों को,
जो बिताए थे हमने,
हर लम्हा हर पल,
ख़ुशी का,
हाँ मैंने बुरे पलों को भुला,
याद रखा है सिर्फ़,
वो हसीन पल,
जो हमें प्रेम सूत्र में बाँध रखता था,

तुम्हारा प्रणय निवेदन,
तुम्हारे साथ बिताया,
हर हसीन पल,
तुम्हीं कहो कैसे भूल जाऊँ,
दिल कहता है भूल जा,
आगे बढ़ ज़िंदगी में,
पर जैसे मेरी ज़िंदगी,
थम सी गई है,
तुम्हारे बिन!!

# अनुमान

तुम्हें अंदाज़ा ही नहीं है,
मेरे प्यार का,
मेरे विश्वास का,
तभी तो तुम बात बात पे,
देते हो ताना,
करते हो अविश्वास,
अगर जरा भी होता अनुमान तुम्हें,
मेरे प्रेम का,
मेरे त्याग का बलिदान का,
न करते मुझसे तुम बेवफ़ाई,
देते मेरा साथ,
न जाते यूँ अकेला छोड़ मुझे,
निभाते मेरा साथ,
जो खाई थी तुमने क़समें,
निभाने की सात जन्मों का साथ,
न भूलते यूँ तुम,
करते हर गुनाह माफ़,
जो किए नहीं मैंने,
किए तो थे तुमने,
हर बार ग़लत साबित कर मुझे,
मनवाई थी तुमने अपनी हर बात,

दिया मैंने भी सदा तुम्हारा साथ,
कभी पूछा नहीं,
क्या सही है क्या ग़लत,
देती रही तुम्हारा साथ,
क्या इससे भी नहीं लगा पाए,
तुम मेरे प्यार का अंदाज़ा,
जो किया है मैंने तुम्हें खुद से ज़्यादा,
तुम्हारी हर गल्ती की नज़रंदाज़,
किया सदा ही माफ़,
तुम्हें पाने की ख़ातिर,
न जाने कितनों के के दिल दुखाए,
छोड़ बाबुल का आँगन,
तुम्हारा घर आँगन महकाया,
क्या अनुमान भी है तुम्हें,
क़ितना दिल है तुमने मेरा दुखाया,
नहीं न?
होगा भी कैसे,
क्योंकि तुमने तो सदा,
बेवफ़ाई ही की है,
मुझे दर्द दे,
ख़ुशी ही पाई है,
मुझसे ज़्यादा दूसरे,
मायने रखते हैं सदा तुम्हारे लिए,

तुमने कब मेरी ख़ुशी में अपनी ख़ुशी चाही है,
मैंने हर दुःख दर्द में निभाया है साथ तुम्हारा,
बदले में सिर्फ़,
दुःख ही पाया है ज़्यादा,
तुम्हें न सही मुझे,
कदर है तुम्हारे प्यार की,
तुम छोड़ भी दो मुझे तो क्या,
जी लूँगी मैं तुम्हारे प्यार के सहारे,
क्योंकि मैंने तुममें,
अपना भगवान पाया है!!!

# बेड़ा पार करेंगे राम

बेड़ा पार करेंगे राम,
ये सोचे मेरा मन बावरा,
कब आओगे बोलो राम!

हाहाकार मचा चहुँ ओर,
बच्चे बूढ़े सब लाचार,
कब चलेगा तुम्हारा ज़ोर!

हर तरफ़ ख़ौफ़ का माहौल है,
सूनी गलियाँ सड़के पड़ी,
घर घर मौत का ख़ौफ़ है!

क्या बच्चे क्या बूढ़े,
हर शख़्स हो रहा बीमार,
मौत का तांडव मचा है बचा लो राम!

ख़ुशियाँ सबकी छिन गईं,
डर की ज़िंदगी जी रहा इंसान,
घरों में क़ैद अब ज़िंदगी हो गई!

अब तो डोर सम्भालो राम,
सुख के पल दे दो राम,
पालन हारी तुम हो राम!

मन व्याकुल है,
तन है कमजोर,
आस तुम्हीं से राम सभी को!

पार लगा दो नैय्या सब की,
रोक लो तांडव मौत का,
लौटा दो मुस्कान सब की!

हर तरफ़ गुणगान हो रहा,
राम तुम्हारे नाम का,
भक्ति में तुम्हारी हर इंसान डूब रहा!

क्यों डोली उठने के पहले ही,
बिदा भी रहीं बेटियाँ अर्थी पर,
कैसा ये रोग लगा,

कहीं पिता कहीं पति,
कहीं बेटा कहीं बहू,
बिछुड़ रहे अपनी से ही!

रोक लो आकर राम ये सब,
अब तो नयन खोलो अपने,
धाम लो हाथ आके अब!

हुई गलती अगर हमसे,
बच्चों को माफ़ तुम कर दो,
कर दो बेड़ा पार राम तुम अब!

नहीं होती सहन अब दूरियाँ अपनों से ही,
कैसी आई हैं ये मजबूरियाँ,
न दुःख में न सुख में मिल पा रहे अपनों से ही!

न कंधा मिल रहा अपनों का,
न मिल रहे अंतिम दर्शन ही,
कैसी विपदा आई है नहीं है कोई अपनों का!

# पापा की परी

सच पापा की जान बसती थी मुझमें,
एक पल भी न दूर रह पाती थी मैं,
आज भी याद है मुझे,
बिदा हुई जब घर से,
क़ितना लिपट कर रोई थी मैं,
मुझसे ज़्यादा रोए थे पापा,
अलग करना हुआ था मुश्किल,
मेरी हर बात बिन कहे समझ जाते थे,
मेरी हर इच्छा पूरी कर जाते थे,
मुझे तकलीफ़ में न देख पाते थे,
मेरे सबसे अच्छे दोस्त बन,
मेरी हर समस्या का समाधान कर जाते थे,
छोटी थी तो ख़ूब,
पैरो में बिठा तेली केता मोली के खिलाते थे,
कभी सुंदर लोरी सुना हमें सुलाते थे,
आज भी नहीं भूल पाई वो गाना,
पापा जल्दी आ जाना,
सात समंदर पार से गुड़ियों के बाज़ार से,
अपने बच्चों को सुनाया,
अब पोती को सुना सुलाती हूँ मैं ये गाना,
मेरी हर ख़्वाहिश करते थे पूरी,

आपकी नकचढ़ी लाड़ली बेटी हूँ मैं,
साथ नहीं आप तो क्या,
हर बात याद है आज भी मुझे,
कैसे उँगली पकड़ चलना सिखाया,
पीठ पीठय्या घोड़ा बन खेल खिलाया,
कभी कौड़ी कभी पत्ते,
रिमझिम बारिश की फुहारों में,
फूटे चने घी में तल कर खिलाया,
ससुराल आई तब भी रोज़ फ़ोन पर,
हालचाल पूछ फिर खाना खाया,
हल्की सी खरोंच आ जाए तो,
सर पर घर उठा लेते थे,
अपने हाथों से खाना मुझे खिलाते थे,
जब हुई बीमार मैं,
एक बार फिर हाथ पकड़ चलना सिखाया था,
सेवा की बिल्कुल बच्चों सी,
बिस्तर से मुझे उठाया था,
इतनी जल्दी चले गए छोड़ कर साथ हमारा,
दे दी ज़िम्मेदारी माँ और छोटी की,
सच मानों पापा जब तक आप थे,
सर गोद में रख मैं रो लेती थी,
जबसे गए आप छोड़कर हमको,
आँसू नहीं बहाती हूँ,

वादा किया था कभी आपसे,
उसे मैं निभाऊँगी,
कभी महसूस न होने दूँगी,
छोटी को कमी आपकी,
पिता बन हर फ़र्ज़ निभाऊँगी,
थामूँगी माँ का हाथ मैं,
कदम न पीछे हटाऊँगी,
कभी चली कदमों में आपके चढ़कर,
आज मैं आपके नक़्शे कदम बढ़ाऊँगी,
पापा मैं हूँ परी आपकी,
अपने हर फ़र्ज़ निभाऊँगी!!

# मानवता की परीक्षा

धीरज धर तू ऐ मानव,
कठिन घड़ी है आई,
अपनों के दर्द में न,
शामिल होना,
उसमें ही है सबकी भलाई!
यही है परीक्षा मानवता की,
साथ न होकर भी,
साथ निभाना है,
अपनों को दुःख की घड़ी में,
ढाँढस बँधाना है!
कर सके जितनी सेवा हम,
कर ले सबकी मन से,
दे सके जितना सहयोग,
प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष,
सहयोग हमें देना है!
मानवता की परीक्षा है ये
सफल हमें तो होना है,
एक दूसरे का हाथ भले न थामें,
पर साथ नहीं हमें छोड़ना है,
हर कदम कदम पर,
कदम न भी मिला पाए हम तो क्या,
हर कदम साथ निभाएँगे,
चाहे आ जाए कोई महामारी,
मिलकर इसे भगाएँगे!!

# माँ

माँ क्या कहूँ तुम्हारे लिए,
कोई शब्द नहीं माँ सा,
माँ में तो दुनियाँ समाहित!

माँ से हम है,
माँ से सारा संसार,
माँ की लीला अपरम्पार!

माँ अद्भुत है,
माँ ममता का भंडार,
माँ से करते सब प्यार!

तुम आस हो,
तुम प्यास हो,
तुम हमारा संसार!

तुम हर दुःख झेल,
पालती हो हमको,
नहीं करती कोई हमसे आस!

सूखा बिछौना रखती हमारा,
सोती खुद गीले में,
नहीं करती कोई कभी शिकायत भरी बात!

करती हर ज़िद हमारी पूरी,
नहीं बताती कोई मजबूरी,
खुश होकर करती हर काम!

रुठ जाएँ कभी हम ग़र,
मना लेती बड़े प्यार से,
होती न नाराज़!

हो जाते कभी पिता नाराज़,
बचाती सदा उनकी डाँट से,
खुद खा लेती बदले में हमारे डाँट!

हमारी ख़्वाहिशों को करने पूरा,
अपनी ख्वाहिशें कर देती दरकिनार,
ख़ुशियाँ लुटाती हम पर अपार!

माँ होती हमारा सुरक्षा कवच,
आँच न आने देती हम पर,
हर दुःख कष्ट से रखती महफ़ूज़!

माँ तो माँ होती है,
क्या क्या लिखूँ कहो तुम पर,
शब्द नहीं कोई जो कर सकूँ व्याख्या तुम पर!

माँ प्रेम है,
माँ हर्ष उल्लास है,
माँ गागर में सागर है!

माँ के चरणों में,
चारों धाम है,
माँ सा न कोई महान है!

माँ जननी है,
माँ प्रेरणा है,
माँ से ही हमारा मान है!

माँ वो ताक़त है,
जो टूटने नहीं देती,
हमेशा साथ खड़ी रहे वो दीवार है!

माँ ससुराल में भी साथ होती है,
उसकी कही हर बात हमें याद होती है,
हम कहीं भी रहे वो यादों में साथ होती है!

माँ की सीख,
रामबान होती है,
हमेशा गिरने से बचाती रहती है!

# गंगा

मैय्या हो गंगा मैय्या,
मैय्या हो गंगा मैय्या,
शिव शीश में विराजित,
होके धरती पे आईं,
धोने पापियों के पाप,
निसदिन तारती हो आप,
सबके धोकर पाप,
करती दूर सबके संताप,
हो रही है मैली गंगा,
धो धोकर पापियों के पाप,
नहीं कोई शर्मिंदा,
करके गंगा मैय्या को मैला,
फेंके पोलिथिन इसमें,
करे गंदे रोज़ तट इनके,
नहीं सफ़ाई का है ध्यान,
मैय्या हो गंगा मैय्या...

करती तुम सबका उद्धार,
सुनती सबकी पुकार,
फिर भी मानव करे रोज़ पाप,
मैला करते रोज़ गंगा का पानी,

करते देखो अपनी मनमानी,
नहीं आए वो बाज,
करते दिन रात पाप,
कहीं धोखा धड़ी,
कहीं इज्जत नारी की लुटी,
कहीं हो रही कोख में हत्या,
फिर आएँ नहाने गंगा घाट,
बोलो कैसे सहे ये अत्याचार मैय्या,
मैय्या हो गंगा मैय्या.....

# विरासत

बहुत कुछ पाया है,
अपने माँ पापा से विरासत में,
माँ ने संस्कारों से सज्ज किया,
पिया ने बाहरी दुनियाँ में जीना सिखाया,
माँ ने घर गृहस्थी सिखाई,
सीखाया सदा यही,
कैसे रहना है ससुराल में,
निभाना है हर रिश्ते बड़े प्यार से,
पिता ने संबल दिया हर हाल में,
अडिग खड़े रहना सिखाया,
दादी दादा ने दिए,
अपने कुछ पुराने नुस्ख़े,
जो काम आ जाते हैं यदा कदा,
होती है जब किसी से थोड़ी खचपच,
संभाल लेती हूँ खुद को याद कर उनकी बातें,
भाई बहन से मिला है विरासत में प्यार,
जो संजो कर रखा है,
हृदय के कोने में,
पिता का लाड़,
माँ का दुलार,
कुछ सीख भतो बातें,

काम आती हैं अक्सर,
जो बिदा होते वक्त दी थी कभी माँ ने,
जिससे चल रही है,
मेरी गृहस्थी आज भी बेहतर,
खुश हूँ खुशहाल है ज़िंदगी,
थोड़ा नहीं बहुत अधिक दिया था माँ पा ने,
जब आई थी डोली तुम्हारे घर,
वो थे संस्कारों से भरी पोटली,
जो आज भी सहेज रखी है,
जो पाया था मैंने उनसे,
वो बच्चों को दे रही हूँ,
ताकि ये संस्कारों धरोहर,
पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहे,
खुशहाल ज़िंदगी उनकी भी कटती रहे!

# तुम और मैं

तुम मुझमें समा जाओ
मैं तुममें समा जाऊँ,
हम जिस्म दो,
मगर जान एक हैं,
आओ हम एक हैं,
एक हो जाएँ,
जिस्म अलग हो न जान,
तुम और मैं से,
हम हो जाएँ,
हम होने में थोड़ी,
कठिनाइयाँ तो होंगी,
सफ़र लम्बा है,
जीवन में कुछ,
उतार चढ़ाव भी होंगे,
पर जिस्म और जाँ,
ग़र हो गए एक,
तो न कोई गिला होगा,
न कोई शिकायत होगी,
बस होंगे हम,
जन्मों जन्मों तक साथ,
आत्मा से परम आत्मा सा होगा,

ये मिलन,
न होगी कभी जीवन में,
अमावस की काली रात,
पूनम के चाँद सा,
उजला होगा जीवन,
होगी चाँद की चाँदनी,
सदा उसके साथ!

# ये लफ़्ज़ आइने हैं

हाँ !
सच ही तो है,
ये लफ़्ज़ आइने हैं
मुँह से निकले हर लफ़्ज़,
हमें बता देते हैं,
क़ितना बुरा कहा,
क़ितना अच्छा कहा,
क्या अच्छा लगा,
क्या बुरा लगा,
मीठे बोल कानों में,
मिश्री घोल जाते हैं,
वहीं कड़वे बोल,
सीने में शूल से चुभ जाते हैं,
यही लफ़्ज़ दोस्तों को,
दुश्मन बना जाते हैं,
सब शब्दों का खेल है,
कोई दिल में उतर जाता है,
कोई दिल से उतर जाता है,
यही लफ़्ज़ पल में,
अपना बना लेते हैं,
यही जन्मों के नाते तोड़,

सदा के लिए,
दूर कर जाते हैं,
बोलने के लहजे से,
पता चल जाता है,
किस अदा से तुमने,
लफ़्ज़ों का किया प्रयोग है,
ताना मारा है मखमली,
या थामी प्रेम की डोर है,

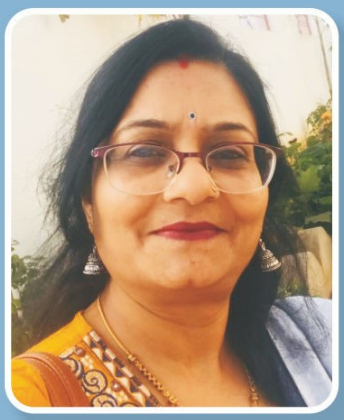

नाम – अदिति रुसिया

जन्म – 16/04/1972

जन्म स्थान – जबलपुर

शिक्षा – बी.ए. (पंडित रविशंकर यूनिवर्सिटी)

पिता – स्व. श्री सतीश चंद्र गुप्ता

माता – श्रीमती मंजुला गुप्ता

पति – श्री संजय रुसिया

बेटा – कार्तिक रुसिया

बेटी – डॉ. कावेरी रुसिया

कार्यक्षेत्र – गृहणी

ईमेल – aditirusia@gmail.com

प्रकाशन – जीवन की धूप छांव (काव्य संग्रह), विचार मंथन (साझा–संकलन), कथा सेतू (साझा–संकलन), वूमन आवाज (नारी से नारी तक), स्त्री विमर्श, रिश्तों की डोर, और भी कई कहानी संग्रह, समय का पहिया, पीर धरा की कई काव्य संग्रह अंतरा शब्दशक्ति, लोकजंग एवं मातृभाषा उन्नयन संस्थान में अनेक रचनाऐं प्रकाशित।

सम्मान – अंतरा शब्दशक्ति सम्मान, भाषा सारथी सम्मान, वुमन आवाज सम्मान, भाव भाषा निर्झरिणी सम्मान, साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान साहित्यिक गतिविधियों में कई सम्मान प्राप्त हुए।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/
978-93-94528-89-5
मूल्य- 560/-
15, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331, मो.- 9009423393, ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com